अंताक्षरी

कहानी माला—33

भाग्य रेखा

□ भीष्म साहनी

भाग्य रेखा

□ भीष्म साहनी

कनॉट सर्कल के बाग में जहां नयी दिल्ली की सब सड़कें मिलती हैं, जहां शाम को रसिक और दोपहर को बेरोजगार आ बैठते हैं, तीन आदमी खड़ी धूप से बचने के लिए, छांह में बैठे, बीड़िया सुलगाए बातें कर रहे हैं। और उनसे जरा हट कर, दाई ओर, एक आदमी खाकी से कपड़े पहने, अपने जूतों का सिरहाना बनाए, घास पर लेटा हुआ लगातार खांस रहा है। पहली बार जब वह खांसा तो मुझे बुरा लगा। चालीस-पैंतालीस वर्ष का कुरूप-सा आदमी सफेद छोटे-छोटे बाल, काला, झाइयों-भरा चेहरा, लंबे-लंबे दांत और कंधे आगे को झुके हुए,

खांसता जाता और पास ही घास पर थूकता जाता। मुझसे न रहा गया। मैंने कहा :

''सुना है विलायत में सरकार ने जगह-जगह पीकदान लगा रखे हैं, ताकि लोगों को घास-पौंधों पर न थूकना पड़े।''

उसने मेरी ओर निगाह उठायी, पल भर घूरा, फिर बोला :

''तो साहब, वहां लोगों को ऐसी खांसी भी न आती होगी।'' फिर खांसा, और मुस्कराता हुआ बोला :

''बड़ी नामुराद बीमारी है, इसमें आदमी घुलता रहता है, मरता नहीं।''

मैंने सुनी-अनसुनी करके, जेब में से अखबार निकाला और देखने लगा। पर कुछ देर बाद कनखियों से देखा, तो वह मुझ पर टकटकी

बांधे मुस्करा रहा था। मैंने अखबार छोड़ दिया :

''क्या धंधा करते हो?''

''जब धंधा करते थे तो खांसी भी यूं तंग न किया करती थी।''

''क्या करते थे?''

उस आदमी ने अपने दोनों हाथों की हथेलियां मेरे सामने खोल दी। मैंने देखा, उसके दाएं हाथ के बीच की तीनों उंगलियां कटी थीं। वह बोला :

''मशीन से कट गई। अब मैं नयी उंगलिया मांगता है।'' कहकर वह हंसने लगा।

''पहले कहां काम करते थे?''

''कालका वर्कशाप में।''

हम दोनों फिर चुप हो गए। उसकी राम-कहानी सुनने को मेरा जी नहीं चाहता था, बहुत-सी राम-कहानियां सुन चुका था। थोड़ी देर तक वह मेरी तरफ देखता रहा, फिर छाती पर हाथ रखे लेट गया। मैं भी लेटकर अखबार देखने लगा, मगर थका हुआ था, इसलिए मैं जल्दी ही सो गया।

जब मेरी नींद टूटी तो मेरे नजदीक धीमा-धीमा वार्तालाप चल रहा था :

''यहां पर भी तिकोन बनती है, जहां आयु की रेखा और दिल की रेखा मिलती हैं। देखा? तुम्हें कहीं से धन मिलने वाला है।''

मैंने आंखें खोलीं। वही दमे का रोगी घास पर बैठा, उंगलियां कटे हाथ की हथेली एक ज्योतिषी के सामने फैलाए, अपनी किस्मत पूछ

रहा था।

"लाग-लपेट वाली बात नहीं करो, जो हाथ में लिखा है, वही पढ़ो।"

"इधर अंगूठे के नीचे भी तिकोन बनती है। तेरा माथा बहुत साफ है,धनजरूरमिलेगा।"

"कब?"

"जल्दी ही।" देखते ही देखते उसने ज्योतिषी के गाल पर एक थप्पड़ दे मारा। ज्योतिषी तिलमिला गया।

कब धन मिलेगा? धन मिलेगा। तीन साल से भाई के टुकड़ों पर पड़ा हूं। कहता है, धन मिलेगा।"

ज्योतिषी अपना पोथी-पत्रा उठाकर जाने लगा, मगर यजमान ने

कलाई खींचकर बिठा लिया :

"मीठी-मीठी बातें तो बता दीं, अब जो लिखा है वह बता, मैं कुछ नहीं कहूंगा।"

ज्योतिषी कोई बीस-बाईस वर्ष का युवक था। काला चेहरा, सफेद कुर्ता और पाजामा जो जगह-जगह सिला हुआ था। बातचीत के ढंग से बंगाली जान पड़ता था। पहले तो घबराया फिर हथेली पर यजमान का हाथ लेकर रेखाओं की मूक भाषा पढ़ता रहा। फिर धीरे से बोला:

"तेरे भाग्य रेखा नहीं है।" यजमान सुनकर हंस पड़ा। "ऐसा कह न साले, छिपाता क्यों है? भाग्यरेखा कहां होती है?"

"इधर, यहां से उस अंगुली तक जाती है।"

"भाग्य-रेखा नहीं होती है तो धन कहां से मिलेगा?"

''धन जरूर मिलेगा। तेरी नहीं तो तेरी घरवाली की रेखा अच्छी होगी। उसका भाग्य तुझे मिलेगा। ऐसा भी होता है।''

''ठीक है, उसी भाग्य पर तो अब तक जी रहा हूं। वही तो चार बच्चे छोड़कर अपनी राह चली गयी है।''

ज्योतिषी चुप हो गया। दोनों एक-दूसरे के मुंह की ओर देखने लगे।

फिर यजमान ने अपना हाथ खींच लिया और ज्योतिषी से बोला: ''तू अपना हाथ दिखा।''

ज्योतिषी सकुचाया, मगर उससे छुटकारा पाने का कोई उपाय न देखकर, अपनी हथेली उसके सामने खोल दी।

''यह तेरी भाग्य-रेखा है?''

''हाँ।''

''तेरा भाग्य तो बहुत अच्छा है! कितने बंगले हैं तेरे?''

ज्योतिषी ने अपनी हथेली बंद कर ली और फिर पोथी—पन्ने सहेजने लगा।

''बैठ जा इधर। कब से यह धंधा करने लगा?''

ज्योतिषी चुप। दमे के रोगी ने पूछा :

''कहां से आया है?''

''पूर्वी बंगाल से।''

''शरणार्थी है?''

'हाँ।'

''पहले भी यह धंधा था?''

ज्योतिषी फिर चुप। तनाव कुछ ढीला पड़ने लगा। यजमान धीरे

से बोला :

'हमसे क्या मिलेगा? जा, किसी मोटर वाले का हाथ देख।''

ज्योतिषी ने सिर हिलाया :

''वह कहां दिखाते हैं ! जो दो पैसे मिलते हैं, तुम्हीं जैसों से।''

सूर्य सामने पेड़ के पीछे ढल गया था। इतने में पांच-सात चपरासी सामने से आए और पेड़ के नीचे बैठ गए।

''जा, उनका हाथ देख। उनकी जेबें खाली न होंगी।''

मगर ज्योतिषी सहमा-सा बैठा रहा। यकायक बाग की आबादी बढ़ने लगी। नीले कुर्ते-पाजामे पहने मजदूर लोगों की कई टोलियां एक-एक करके आई, और पास के फुटपाथ पर बैठने लगीं।

फिर एक नीली-सी लारी झपटती हुई आई, और बाग के ऐन सामने

रूक गई। उसमें से पंद्रह-बीस लटठ्धारी पुलिस वाले उतरे और सड़क के पार कतार में खड़े हो गए। बाग की हवा में तनाव आने लगा। राहगीर पुलिस को देखकर रूकने लगे। पेड़ों के तले भी कुछ मजदूर आ जुटे।

''लोग किसलिए जमा हो रहे हैं?'' ज्योतिषी ने यजमान से पूछा।

''तुम नहीं जानते? मई दिवस है, मजदूरों का दिन है।''

फिर यजमान गंभीर हो गया :

''आज के दिन मजदूरों पर गोली चली थी।''

मजदूरों की तादाद बढ़ती ही गई और मजदूरों के साथ खोंचें वाले,

मलाई, बरफ, मूंगफली, चाट, चबेना वाले भी आ पंहुचे, और घूम-घूम कर सौदा बेचने लगे।

इतने में शहर की ओर से नारे लगाने कि आवाज। बाग से लोग दौड़-दौड़ कर फुटपाथ पर जा खड़े हुए। सड़क में चार सिपाही लाठियां संभाले तनकर खड़े हों गए।

जुलूस आ रहा था। नारे गूंज रहे थे। हवा में तनाव बढ़ रहा था। फुटपाथ पर खड़े लोग भी नारे लगाने लगे।

पुलिस की एक लारी आ लगी, और लाठीधारी सिपाही कूद-कूदकर उतरे।

''आज लाठी चलेगी।'' यजमान ने कहा पर किसी ने कोई उत्तर न दिया।

सड़क के दोनों ओर भीड़ जम गई। सवारियों का आना-जाना रूक गया। शहर वाली सड़क पर से एक जुलूस बाग की तरफ बढ़ता

हुआ नजर आया। फुटपाथ वाले भी उसमें जा-जाकर मिलने लगे। इतने में दो और जुलूस अलग-अलग दिशा से बाग की तरफ आने लगे। भीड़ जोश में आने लगी। मजदूर बाग के सामने आठ-आठ की लाइन बनाकर खड़े होने लगे। नारे आसमान तक गूंजने लगे, और लोगों की तादाद हजारों तक जा लगी। सारे शहर की धड़कन मानो इसी भीड़ में पुंजीभूत हो गई हो। कई जुलूस मिलकर एक हो गए। मजदूरों ने झंडे उठाए और बढ़ने लगे। पुलिस वालों ने लाठियां उठा लीं और साथ-साथ जाने लगे।

फिर वह भीमाकार जुलूस धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। कनॉट-सरकस की मालदार, धुली-पुती दीवारों के सामने वह अनोखा लग रहा था, जैसे नीले आकाश में सहसा अंधियारे बादल करवटें लेने लगे। धीरे-धीरे

चलता हुआ जुलूस उस ओर घूम गया जिस तरफ से पुलिस की लारियां आई थीं। ज्योतिषी अपनी उत्सुकता में बेंच के ऊपर खड़ा हुआ था। दमे का रोगी, अब भी अपनी जगह पर बैठा, एकटक जुलूस को देख रहा था।

दूर होकर नारों की गूंज मंद पड़ने लगी। दर्शकों की भीड़ बिखर गई। जो लोग जुलूस के संग नहीं गए, वे अपने घरों की ओर रवाना हुए। बाग पर धीरे-धीरे दोपहर जैसी ही निस्तब्धता छाने लगी। इतने में एक आदमी, जो बाग के आर-पार तेजी से भागता हुआ जुलूस की ओर जा रहा था, सामने से गुजरा। दुबला-सा आदमी, मैली गंजी और जांघिया पहने हुए। यजमान ने उसे रोक लिया :

''क्यों दोस्त, जरा इधर तो आओ।''

''क्या है?''

''यह जुलूस कहां जाएगा।''

''पता नहीं। सुनते हैं, अजमेरी गेट, दिल्ली-दरवाजा होता हुआ लाल किले जाएगा, वहां जलसा होगा।

''वहां तक पंहुचेगा भी! यह लटठ्धारी जो साथ जा रहे हैं, जो रास्ते में गड़बड़ हो गई तो?''

''अरे गड़बड़ तो होती ही रहती है, जुलूस रूकेगा थोड़े ही।'' कहता हुआ वह आगे बढ़ गया।

दमे का रोगी जुलूस के ओझल हो जाने तक, टकटकी बांधे उसे देखता रहा। फिर ज्योतिषी के कंधे को थपथपाते हुआ, उसकी आंखों में आंखे डालकर मुस्कराने लगा। ज्योतिषी फिर कुछ सकुचाया,

घबराया। यजमान बोला :

''देखा, साले?''

''हां, देखा है।''

अब भी यजमान की आंखें जुलूस की दिशा में अटकी हुई थी। फिर मुस्कराते हुए, अपनी उंगलियां—कटी हथेली ज्योतिषी के सामने खोल दीं :

''फिर देख हथेली, तू कैसे कहता है कि भाग्य-रेखा कमजोर है?'' और फिर बांए हाथ से छाती को थामे जोर-जोर से खांसने लगा।

•

आपके जवाब के इन्तजार में—
शिवसिंहनयाल
'अलारिप्पु' बी-6/62 पहली मंजिल सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली—29, दूरभाष : 6109327

ज्योति लेजर टाइप सेटिंग
दिल्ली—110092